घनान्द का साक्षप्त जावन परिचय

डॉ. अनामिका जैन
सहायक आचार्या
हिन्दी विभाग

इनका जन्म १६८९ ई० में हुआ था। ये जाति के कायस्थ थें। ये मुगल बादशाह बहादुरशाह 'रंगीले' के मीर मुंशी थें। ये कविता में निपुण तथा संगीत में भी सिद्धहस्त थें। मुगल दरबार में इनका सम्मान इनके विरोधियों की ईर्ष्या कारण बन गया और वे इनके विरुद्ध षड्यंत्र करने लगे। ये सुजान नाम की एक नर्तकी या वेश्या से प्रेम करते थें। ऐसा प्रचलित है कि एक बार षड्यंत्रकारी दरबारियों की गुजारिश पर बादशाह ने इनसे गाने को कहा।

इन्होंने टाल-मटोल कर इंकार कर दिया पर जब सुजान ने कहा तो गाने लगे, पर बादशाह की ओर पीठ फेर कर और सुजान की ओर उन्मुख होकर। बादशाह को यह उपेक्षापूर्ण व्यवहार असह्य प्रतीत हुआ। उसने इन्हें दिल्ली छोड़ने का हुक्म दिया। दिल्ली छोड़ते समय इन्होंने सुजान से भी साथ चलने के लिए कहा पर उसने इंकार कर दिया। सुजान के नकारात्मक उत्तर से इनका ह्रदय आहत हुआ। इस सन्दर्भ में हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि - " जब ये

चलने लगे तब सुजान से भी साथ चलने को कहा पर वह न गयी। इस पर इन्हें विराग उत्पन्न हो गया और ये वृन्दावन जाकर निम्बार्क सम्प्रदाय के वैष्णव हो गये और वहीं पूर्ण विरक्ति से रहने लगे।" निम्बार्क सम्प्रदाय में माधुर्य भक्ति को महत्व दिया गया है। ईश्वर और जीव के सम्बन्ध में माधुर्य का समावेश करना इस संप्रदाय की विशेषता रही है। घनानंद का प्रेमी मन सहज ही इस संप्रदाय से प्रभावित हो गया । दीक्षा के बाद इनका साम्प्रदायिक नाम 'बहुगुनी' रखा गया।

इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल लिखते हैं कि - " सं.

में जब नादिरशाह की सेना के सिपाही मथुरा तक आ पहुँचे तब कुछ लोगों ने उनसे कह दिया की वृन्दावन में बादशाह का मुंशी रहता है; उसके पास बहुत कुछ माल होगा। सिपाहियों ने इन्हें आ घेरा और 'जर- जरोंट (अर्थात धन, धन, धन लाओ) चिल्लाने लगे। घनानंद जी शब्द को उलटकर ' रज, रज, रज' कह कर तीन मुठी वृन्दावन की धूल उन पर फेंक दी। उनके पास सिवा इसके और था ही क्या? सैनिकों ने क्रोध में आकर इनका हाथ काट डाला।"

धन्यवाद